Bani Israel Ki Tabahi Ke Asbaab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 348
Weekly Booklet : 348

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दावत" की एक क़िस्त बनाम

बनी इस्राईल की तबाही के अस्बाब

(सफ़हात 19)

दीन के दो हिस्से ज़ाइल कर दिये 09
मुसल्मानाने इराक़ की दिल ख़राश दास्तान 11
क़ुर्तुबा की जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ पर पाबन्दी है 14
मुहद्दिसे आ'ज़म की इन्फ़िरादी कोशिश 19

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब ‘‘नेकी की दा’वत’’ के सफ़ह़ा 528 ता 544 से लिया गया है।

बनी इस्राईल की तबाही के अस्बाब

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला : ‘‘**बनी इस्राईल की तबाही के अस्बाब**’’ पढ़ या सुन ले उसे दोनों जहां की बरबादियों से बचा और उसे मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदोस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमां। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ऐ लोगों बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ पढ़े होंगे। (مسند فردوس، 5/277، حدیث:8175)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

घर में दीनी माह़ोल कैसे बना ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सिर्फ़ नौ जवान ही को नेकी की दा’वत देने का रुज्ह़ान क्यूं ? घर के सरकर्दा अफ़्राद पर तवज्जोह की ज़ियादा ज़रूरत है अगर वोह तरकीब में आ गए तो घर के अन्दर तेज़ी से दीनी माह़ोल बन सकता है और ख़ानदान भर में नमाज़ों और सुन्नतों की बहारें आ सकती हैं, इस बात की तौसीक़ (तस्दीक़) इस मदनी बहार से हो सकती है जैसा कि एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मुआ़शरे

के बहुत से घरों की त़रह़ उन के घर में भी T.V. पर फ़िल्में ड्रामे और ख़ूब गुनाहों भरे प्रोग्राम देखे जाते थे, ऐसी मन्ह़ूस सूरते ह़ाल में घर में सुन्नतों भरा दीनी माह़ोल क्यूंकर क़ाइम हो सकता था ! सब से पहले ख़ुश क़िस्मती से उन के बड़े भाईजान दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हुए। वोह घर वालों को बहुतेरा समझाते, बारहा इन्फ़िरादी कोशिश करते मगर उन के कान पर जूं तक न रेंगती । घर में T.V. की मौजूदगी पर भी भाईजान तश्वीश का शिकार रहते, क्यूं कि घर के अन्दर सुन्नतों भरे माह़ोल की राह में येह बहुत बड़ी रुकावट था, वोह उसे निकालना चाहते थे मगर कुछ कर न पाते क्यूं कि घर में सिर्फ़ वालिद साह़िब की चलती थी। एक दिन हम घर वाले रात को T.V. पर ड्रिमा देख कर अभी फ़ारिग़ ही हुए थे कि भाईजान आए और उन्हों ने टेप रिकॉर्डर पर मक्तबतुल मदीना की जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की एक कैसिट लगा दी । अन्दाज़े बयान बहुत दिलचस्प था लिहाज़ा सब उसे बड़ी तवज्जोह से सुनने लगे। उस बयान में मुबल्लिग़ ने जब T.V. की तबाह कारियां बयान कीं तो सब आख़िरत ख़राब होने के डर से घबरा गए, बिल ख़ुसूस अब्बूजान तो ख़ौफ़ के मारे कांपने लगे। जब बयान ख़त्म हुवा तो अब्बूजान ने बुलन्द आवाज़ में अपना फ़ैसला सुनाया : अब इस घर में T.V. नहीं चलेगा। सारे घर वाले उसी वक़्त छत पर गए और टीवी एन्टीना उखाड़ फेंका और घर से T.V. निकाल दिया गया। कुछ दिनों बा'द इन के छोटे भाई ने अब्बू से T.V. दोबारा लाने का मुत़ालबा किया तो अब्बूजान ने पुरजोश लहजे में फ़रमाया : अब इस घर में T.V. रहेगा या मैं । येह सुन कर भाई को "चुप" लग गई । यूं दा'वते इस्लामी की बरकत से اَلْحَمْدُلِلّٰه हमारा घर फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों की

नुहूसतों से पाक हो गया और सारा ही घराना दा'वते इस्लामी के महके महके दीनी माहोल से वाबस्ता हो गया।

तेरा शुक्र मौला दिया दीनी माहोल   न छूटे कभी भी ख़ुदा दीनी माहोल

सलामत रहे या ख़ुदा दीनी माहोल   बचे बद नज़र से सदा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी का चैनल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह "**मदनी बहार**" ग़ालिबन उन दिनों की है जब आ़लमे इस्लाम का सो फ़ीसदी शरई चैनल या'नी "दा'वते इस्लामी का चैनल" जारी नहीं हुवा था। टीवी की ग़ैर इस्लामी नश्रिय्यात जैसा कि फ़िल्मों ड्रामों, गाने बाजों, औ़रतों की नुमाइशों, मूसीक़ियों की धुनों औ़रत और मूसीक़ी से आलूद ख़बरों नीज़ ग़ैर अख़्लाक़ी प्रोग्रामों से न मैं पहले राज़ी था न अब राज़ी हूं, हर बा शुऊ़र मुसल्मान येह जानता है कि हमारे मुआ़शरे की तबाही में T.V. का बहुत अहम किरदार है ! मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी ने T.V. की तबाह कारियों के ख़िलाफ़ अच्छी ख़ासी मुहिम चलाई, इन काविशों में कुछ न कुछ काम्याबी भी मिली, जिस का एक सुबूत मज़्कूरा मदनी बहार भी है, मगर फ़ी ज़माना हज़ार में से शायद तक़रीबन नव सो निन्नान्वे (999) मुसल्मान T.V. के रसिया हो चुके हैं और ग़ालिब अक्सरिय्यत दुन्या व आख़िरत की भलाई बुराई की परवाह किये बिग़ैर **T.V.** की ग़ैर शरई व ग़ैर अख़्लाक़ी नश्रिय्यात देखने में मश्ग़ूल है। **T.V.** बीनी में इन की **जुनून** की ह़द तक दिलचस्पी की वज्ह से शैत़ान की उन के किरदार के साथ साथ इस्लामी अक़्दार पर भी यलग़ार है।

इब्लीस की तह़रीक पर इस्लाम ही का लबादा ओढ़ कर बा'ज़ लोग इस्लाम को मॉडर्न अन्दाज़ में पेश करने की मज़्मूम सई कर रहे हैं, इस्लाम की ह़क़ीक़ी रूह़ मुसल्मानों के दिलों से निकाली जा रही है। अब अगर हम मसाजिद वग़ैरा में **T.V.** की तबाह कारियां बयान करते भी हैं तो सुनने वालों की ता'दाद कितनी ? क्यूं कि ब मुश्किल **5** फ़ीसद मुसल्मान नमाज़ पढ़ते होंगे, उन में भी इक्का दुक्का ही मज़्हबी बयान सुनने में दिलचस्पी लेता है, नीज़ इस्लामी बहनों को मस्जिद का बयान कौन सुनाए ? अगर लिट्रेचर छापते हैं तो दीनी मुत़ालआ़ करने वालों की ता'दाद मायूसी की ह़द तक कम है ! इन ना मुसाइद ह़ालात में इस बात का शिद्दत से एह़सास हुवा कि मुसल्मानों की इस इस्लाह़ का दाइरए कार अगर सिर्फ़ मसाजिद और इज्तिमाआ़त वग़ैरा की ह़द तक रखते हैं तो उम्मत की ग़ालिब अक्सरिय्यत तक हमारा दर्द भरा दीनी पैग़ाम पहुंच ही नहीं पाता और त़ाग़ूती त़ाक़तें यक त़रफ़ा त़ौर पर अपने मुख़्तलिफ़ चैनल्ज़ के ज़रीए़ मुसल्मानों को गुमराह करती रहेंगी। अग़्लब गुमान येही है कि मुसल्मानों के घरों से अब **T.V.** निकलवाना मुश्किल ही नहीं क़रीब ब ना मुम्किन है, बस एक ही सूरत नज़र आई और वोह येह कि जिस त़रह़ दरिया में सैलाब आता है तो उस का रुख़ खेतों वग़ैरा की त़रफ़ मोड़ने की कोशिश की जाती है ताकि खेत भी सैराब हों और आबादियों को भी हलाकत से बचाया जा सके, ऐन इसी त़रह़ **T.V.** के ज़रीए़ आने वाले तूफ़ाने बद तमीज़ी के सैलाब की रोकथाम की कोशिश के लिये T.V. ही के ज़रीए़ मुसल्मानों के घरों में दाख़िल हुवा जाए और उन को ग़फ़्लत की नींद से बेदार किया जाए और गुनाहों और गुमराहियों के सैलाब से उन्हें ख़बरदार किया जाए चुनान्चे जब मा'लूम हुवा

कि अपना **T.V. चैनल** खोल कर फ़िल्मों ड्रामों, गानों बाजों, मूसीक़ियों की धुनों और औ़रतों की नुमाइशों से बचते हुए **100 फ़ीसदी इस्लामी** मवाद फ़राहम करना मुम्किन है तो اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी की हिन्द मुशावरत ने ख़ूब जिद्दो जहद कर के 27 **रजबुल मुरज्जब** 1445 हि. में दा'वते इस्लामी के चैनल के ज़रीए़ नेकियों और घर घर सुन्नतों का दीनी पैग़ाम पेश करना शुरूअ़ कर दिया और देखते ही देखते कई घरों में **T.V.** पर दा'वते इस्लामी का चैनल देखा जाने लगा और इन्टरनेट के ज़रीए़ ता दमे तह़रीर कई घरों में दा'वते इस्लामी का चैनल दाख़िल हो चुका है और यूं दा'वते इस्लामी का दीनी पैग़ाम पहुंच गया है। اَلْحَمْدُلِلّٰه इस के ह़ैरत अंगेज़ मदनी नताइज आने लगे हैं। यक़ीनन इस की येह बरकत तो बच्चा भी समझ सकता है कि जब तक दा'वते इस्लामी का चैनल घर या दफ़्तर वग़ैरा में ऑन रहेगा कम अज़ कम उस वक़्त तक तो मुसल्मान दूसरे गुनाहों भरे चैनल्ज़ से बचे रहेंगे ! اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी का चैनल सो फ़ीसदी इस्लामी चैनल है, न इस में मूसीक़ी है न ही औ़रत की नुमाइश। इस पर कारोबारी इश्तिहारात (एडवर्टाइज़) भी नहीं दिये जाते। दा'वते इस्लामी के चैनल में क्या है ? इस में फ़ैज़ाने क़ुरआन, फ़ैज़ाने ह़दीस, फ़ैज़ाने अम्बिया, फ़ैज़ाने सह़ाबा और फ़ैज़ाने औलिया के मा'लूमाती रूह़ परवर सिल्सिले हैं, इस में तिलावतें, ना'तें, मन्क़बतें दा'वते इस्लामी की मदनी ख़बरें और मदनी ख़ाके हैं, दुआ़ व मुनाजात में इल्ह़ाह़ व ज़ारी के दिल हिला देने वाले और इ़श्क़े रसूल में रोने रुलाने और तड़पाने वाले रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर हैं, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, रूह़ानी इलाज, सुन्नतों भरे मदनी फूल और आख़िरत बेहतर बनाने वाली ख़ूब मदनी बहारें हैं। इस में सुन्नतों भरे

इज्तिमाआ़त, सुब्ह़ के वक़्त "एक नई सुब्ह़" वग़ैरा कई सिल्सिले बराहे रास्त (LIVE) भी दिखाए जाते हैं। अल ग़रज़ दा'वते इस्लामी का चैनल एक ऐसा चैनल है कि इस के ज़रीए इन्सान घर बैठे अच्छा ख़ासा इल्मे दीन सीख सकता है ! दा'वते इस्लामी के चैनल की मदनी बहारों के क्या कहने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ चैनल देख कर कई गुमराहों को हिदायत की दौलत नसीब हो गई, नीज़ न जाने कितने ही "बे नमाज़ी" नमाज़ी बन गए, मुतअ़द्दिद अफ़्राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का आग़ाज़ कर दिया। एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा हो।

जब मुझे दा'वते इस्लामी का चैनल देखने की सआ़दत मिली

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे दीनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले वोह एक आवारा और झगड़ालू नौ जवान था, अख़्लाक़ इतने गिरे हुए थे कि बद निगाही करते हुए कोई शर्म मह़सूस न होती, किसी को सलाम करना गवारा करते न किसी का एह़तिराम करना, **अल ग़रज़** राहे सुन्नत से दूर बहुत दूर गुनाहों की कीचड़ में लत पत पड़े थे। आख़िरे कार रह़मतों भरी हवा ने मेरे आंगन का भी रुख़ कर ही लिया, हुवा यूं कि ख़ुश क़िस्मती से एक मर्तबा उन्हें दा'वते इस्लामी के चैनल देखने की सआ़दत मिल गई, ख़ुदा की शान कि मुझ गुनाहों से लिथड़े हुए गन्दे इन्सान को येह इतना पसन्द आया कि मैं रोज़ाना इस के मुख़्तलिफ़ मदनी सिल्सिले देखने लगा। दा'वते इस्लामी का चैनल देखने की सब से पहली बरकत येह ज़ाहिर हुई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ वोह नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद जाने लगा। वहां एक दिन मेरी मुलाक़ात एक आ़शिक़े रसूल, सुन्नतों के पैकर, मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से हुई, उन से

मिल कर उन के दिल को बहुत सुकून मिला। वोह इस्लामी भाई एक दिन उन की दुकान पर तशरीफ़ लाए और उन्हों ने उन्हें "नेकी की दा'वत" पेश की। उस "नेकी की दा'वत" के तुफ़ैल उन्हों ने ज़िन्दगी में पहली बार दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की। वहां पर होने वाली तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरा बयान, ज़िक्रुल्लाह की सदाएं सुन कर उन्हें इन्तिहाई लुत्फ़ आया, इज्तिमाअ़ के आख़िर में होने वाली रिक्क़त अंगेज़ दुआ़ तो उन्हें इतनी भली लगी कि वोह दा'वते इस्लामी को दिल दे बैठे, अब उन की ह़ालत ऐसी हो गई कि जहां कहीं इमामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस आ़शिक़ाने रसूल नज़र आते उन की आंखें ठन्डी हो जातीं। फिर दीनी माह़ोल की बरकत से اَلْحَمْدُلِلّٰہ उन्हों ने अपने चेहरे पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी शरीफ़ भी सजा ली। **अल्लाह** पाक की रह़मत से रमज़ानुल मुबारक (1430 हि.) में दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले पूरे माहे रमज़ान के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत पाई। अपने दो भतीजों को मद्रसतुल मदीना में हि़फ़्ज़े कु़रआन के लिये दाख़िल करवाया है, उन्हों ने अपनी दुकान पर **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स भी शुरूअ़ कर दिया है। **अल्लाह** पाक दा'वते इस्लामी को दिन 11वीं और रात 12वीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए जिस ने ऐसा प्यारा चैनल खोला कि मुझ जैसे गुनाहों के पुलन्दे की इस्लाह़ का सामान हुवा। मेरे छोटे छोटे बच्चों को "दा'वते इस्लामी का चैनल" देखने की बरकत से शायद इतनी मा'लूमात हैं जो उन्हें अब इस उ़म्र में आ कर मिली हैं। "वाह! क्या बात है दा'वते इस्लामी के चैनल की।"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बनी इस्राईल की तबाही के अस्बाब

हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि नबियों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : **बनी इस्राईल** में जो सब से पहला (दीन में) नुक़्सान आया वोह येह था कि एक शख़्स दूसरे से मिलता और (किसी गुनाह को देख कर) उसे कहता : **अल्लाह** पाक से डर और ऐसा न कर क्यूं कि येह तेरे लिये ह़लाल नहीं। अगले दिन उसे गुनाह करता देखने के बा वुजूद वोह उस के साथ अपने तअ़ल्लुक़ात, खाने पीने और निशस्त व बरख़ास्त की वज्ह से मन्अ़ न करता, जब (आ़म तौ़र पर) उन्हों ने ऐसा किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने उन के दिल एक दूसरे के साथ ख़ल्त़ कर दिये। (या'नी ना फ़रमानों की नुहूसत से फ़रमां बरदारों के दिल भी वैसे ही हो गए) फिर हुज़ूर सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ताईद में क़ुरआने करीम की येह आयात पढ़ीं :

لُعِنَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا یَعْتَدُوْنَ(۷۸) كَانُوْا لَا یَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا یَفْعَلُوْنَ(۷۹)

(پ6،المائدۃ:78، 79)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में **दावूद और ईसा बिन मरयम** की ज़बान पर, येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का। जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।

फिर सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! तुम ज़रूर नेकी का हुक्म देते रहो और गुनाहों से मन्अ़ करते रहो और ज़ालिम को ज़ुल्म से रोकते रहो और उस को ह़क़ बात की त़रफ़ खींच कर लाते रहो, वरना **अल्लाह** पाक तुम्हारे दिल भी ख़ल्त़ (या'नी ना फ़रमानों की नुहूसत से

उन्हीं जैसे) कर देगा और तुम पर भी ला'नत फ़रमाएगा, जैसे उन पर ला'नत फ़रमाई। (سنن کبریٰ للبیہقی،10/159،حدیث:20196۔ابوداؤد،4/162،163،حدیث:4336،4337)

बयान कर्दा ह़दीसे पाक के तह़्त "मिरआतुल मनाजीह़" में है : सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के अरबाबे इख़्तियार और उ़लमा को मुतनब्बेह (या'नी ख़बरदार) किया कि तुम्हें उस त़रीक़ए कार से बचना होगा और बुराई का इरतिकाब करने वालों का हाथ रोकना होगा, मुनाफ़क़त व मुदाहनत (बुराई मिटाने पर क़ुदरत के बा वुजूद बे ह़मिय्यती, लालच या जानिब दारी की वज्ह से ख़ामोश रहने) से काम लेने के बजाए ग़ैरते ईमानी का मुज़ाहरा करना और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوف وَنَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر से मुतअ़ल्लिक़ अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करना होगा, ज़ालिम का हाथ रोक कर उसे राहे ह़क़ पर लाना होगा वरना तुम भी बनी इस्राईल की त़रह़ ला'नत के मुस्तह़िक़ हो जाओगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/513)

या ख़ुदा ! नेकों से उल्फ़त नेकियों से प्यार दे
जो करे बदियों से नफ़रत वोह दिल ऐ ग़फ़्फ़ार दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

दीन के दो ह़िस्से ज़ाइल कर दिये

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ की ख़िदमते बा बरकत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मैं दो के सिवा भलाई के तमाम काम करता हूं। फ़रमाया : वोह **दो काम** कौन से हैं ? अ़र्ज़ की : ﴾1﴿ मैं किसी को नेकी का हुक्म नहीं देता और ﴾2﴿ किसी को बुराई से नहीं रोकता। इर्शाद फ़रमाया : तू ने **दीन के दो ह़िस्से ज़ाइल** किये, अब **अल्लाह** पाक चाहे तो तेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे या तुझे अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे। (احکام القران للجصاص،2/612)

अल्लाह मैं देता ही रहूं नेकी की दा'वत ऐसा मुझे जज़्बा दे पए शाहे रिसालत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बेचारा मुसल्मान !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नेकी की दा'वत से बाज़ रहने वाला और दूसरों को बुराई से मन्अ़ न करने वाला बहुत ज़ियादा नुक़्सान में है। आज मुसल्मानाने आ़लम की अक्सरिय्यत की जो ह़ालत है वोह किसी से मख़्फ़ी (या'नी ढकी छुपी) नहीं हर त़रफ़ बे अ़मली का दौर दौरा है, उ़मूमन कोई किसी को ख़त़ाओं पर टोकने के लिये तय्यार नहीं, मुसल्मान अ़मली त़ौर पर तनज़्ज़ुल के अ़मीक़ (या'नी गहरे) गढ़े में तेज़ी से गिरता चला जा रहा है, बर्रे सग़ीर के मुसल्मानों की ह़ालत तो शायद अब भी ग़नीमत है दूसरे इस्लामी ममालिक में जा कर देखें तो मुसल्मानों का ह़ाल देख कर ख़ून रोएं तब भी कम है।

औलाद को सुन्नतें सिखाइये वरना पछताएंगे

اَلْحَمْدُلِلّٰه रजबुल मुरज्जब 1406 हि. में सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को करबलाए मुअ़ल्ला व बग़दाद शरीफ़ वग़ैरा मुक़द्दस शहरों में ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई, मगर आह ! वहां के मुसल्मानों की ह़ालते ज़ार बयान करने से ज़बान व क़लम क़ासिर हैं, ताहम चन्द बातें अ़र्ज़ करता हूं ताकि हम लोग **अल्लाह** पाक के क़हरो ग़ज़ब से डरें और **अल्लाह** पाक करे नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये कमर बस्ता हों, वरना क्या अ़जब हमारी आइन्दा नस्लें ऐसी तबाह व बरबाद हों कि तबाही व बरबादी भी उन को देख कर थर्रा उठे ! क्यूं कि ह़ालात ही ऐसे हैं। मौजूदा ता'लीमी इदारे और उन का माह़ोल, वालिदैन की सिर्फ़ और सिर्फ़ येह धुन कि बच्चा पढ़ लिख

कर पूरा मॉडर्न बने और ख़ूब धन दौलत कमा कर लाए, अगर्चे मग़रिबी तहज़ीब का दिलदादा बच्चा जवान हो कर मां बाप से पीठ ही फेर ले, या क़ब्ल अज़ जवानी ही मौत बच्चे को आ संभाले और वालिदैन उस की कमाई खाने के सुहाने सपने शर्मिन्दए ता'बीर होते न देख सकें, नीज़ हमारे यहां के ज़राए़ इब्लाग़ (MEDIA) भी इस्लाम के ज़र्रीं उसूलों पर मुसल्सल कारी ज़र्बें लगा रहे हैं, अगर येही ह़ालत रही तो हमारी आइन्दा नस्लों की हलाकत से बचने की ब ज़ाहिर कोई सूरत नज़र नहीं आती।

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है
उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से
परदेस में वोह आज ग़रीबुल ग़ुरबा है
वोह दीन हुई बज़्मे जहां जिस से फ़रोज़ां
अब उस की मजालिस में न बत्ती न दिया है
डर है कहीं येह नाम भी मिट जाए न आख़िर
मुद्दत से इसे दौरे ज़मां मेट रहा है
फ़रियाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

मुसल्मानाने इराक़ की दिल ख़राश दास्तान

अब इराक़ शरीफ़ के चन्द रोज़ा सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ वोह बातें बयान करता हूं कि जिन से इस्लाम का दर्द रखने वालों का जिगर पाश पाश हो जाता है। चुनान्चे हम तीन इस्लामी भाई, इराक़ी त़य्यारे में हवाई अड्डे से सुवार हुए, परवाज़ में दो घन्टे ताख़ीर हुई, दौराने परवाज़ नमाज़े मग़रिब का वक़्त आ गया, त़य्यारे ही में अज़ान दे कर हम तीनों ने जमाअ़त क़ाइम की, नमाज़ से फ़राग़त के बा'द जब हम अपनी निशस्तों की त़रफ़ चले तो इराक़ी मुसाफ़िरीन हमें बड़ी ह़ैरत से देख रहे थे और नमाज़ पढ़ने पर दुआ़ए क़बूलिय्यत व बरकत से नवाज़ रहे थे, जैसे हम ने कोई बहुत बड़ा कमाल कर डाला हो ! इस से हम पर येह तअस्सुर क़ाइम हुवा कि

ग़ालिबन येह लोग नमाज़ नहीं पढ़ते मगर नमाज़ को पसन्द ज़रूर करते हैं और इराक़ शरीफ़ जा कर भी मसाजिद ख़ाली देख कर येही अन्दाज़ा हुवा कि शायद हज़ार इराक़ी मुसल्मानों में इक्का दुक्का मुसल्मान ही नमाज़ पढ़ता होगा !!

जाए नमाज़ में गाने बाजे !

हम जब अ़रूसुल बिलाद बग़दाद शरीफ़ के बैनल अक़्वामी मत़ार पर उतरे और इशा की नमाज़ के लिये मत़ार (AIR PORT) ही की एक जाए नमाज़ में दाख़िल हुए तो आप मानें या न मानें उस जाए नमाज़ की अन्दरूनी छत में स्पीकर लगा हुवा था और बा क़ाइदा मूसीक़ी के साथ गाने जब रहे थे !! जी हां, वोह जगह नमाज़ ही के लिये मख़्सूस थी और उस के बाहर जली हुरूफ़ में लिखा हुवा था : هٰذَا بَيْتُ الله या'नी "येह **अल्लाह** पाक का घर है।" हम हैरान रह गए हम अजनबी मुसाफ़िर थे दिल में बुरा जानने के सिवा कर भी क्या सकते थे ! ऐसे मौक़ेअ़ पर बुराई को रोकने पर जो क़ादिर न हो उसे चाहिये कि उस बुराई को कम अज़ कम दिल में ज़रूर बुरा जाने। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : "जब ज़मीन में गुनाह किया जाए तो जो वहां मौजूद है मगर उसे बुरा जानता है वोह उस की मिस्ल है जो वहां नहीं है और जो वहां नहीं है मगर उस पर राज़ी है वोह उस की मिस्ल है जो वहां ह़ाज़िर है।"

(ابو داؤد،4/166،حدیث:4345)

क्या तमाशा है कि अब नाक़ा सुवाराने अ़रब पैरवी करते हैं योरोप के हुदी ख़्वानों की

कूफ़े की जामेअ़ मस्जिद में जुमुआ़ नहीं होता !

आह ! कूफ़े की वोह जामेअ़ मस्जिद जिस से मुत्तसिल ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का मज़ारे फ़ाइज़ुल

अन्वार है। वहां ज़ियारत के लिये हम जुमुआ़ की नमाज़ के वक़्त ह़ाज़िर हुए, ज़ाइरीन का बे पनाह हुजूम था। मा'लूम करने पर पता चला कि यहां कोई नमाज़ नहीं पढ़ाई जाती ह़त्ता कि जुमुआ़ की नमाज़ भी क़ाइम नहीं की जाती.......!!

सभी दाढ़ी मुन्डे

बग़दादे मुअ़ल्ला में हमें इस बात का शिद्दत से एह़सास हुवा कि यहां के मुसल्मान मुसल्मानी शआ़इर से बिल्कुल ना बलद हो चुके हैं क्यूं कि उ़मूमन कोई मक़ामी बाशिन्दा दाढ़ी रखता ही नहीं, ह़त्ता कि अइम्मा व मुअज़्ज़िनीन वग़ैरा सब के सब दाढ़ी मुन्डे ! चूंकि हम तीनों बा रीश और बा इमामा थे, बग़दादे मुअ़ल्ला की गलियों में जब हम निकलते तो लोग हमें इन्तिहाई ह़ैरत से तकते रहते और कभी कभी तो नौबत यहां तक आती कि हमें घेर कर मुतअ़ज्जिबाना सुवाल किया जाता : "هَلْ اَنْتُمْ مُسْلِمُوْن؟" क्या तुम लोग मुसल्मान हो ? जब हम इक़रार करते कि "اَلْحَمْدُ لِلّٰه نَحْنُ مُسْلِمُوْن" या'नी "اَلْحَمْدُ لِلّٰه हम मुसल्मान हैं" तो वोह खुश हो कर आगे गुज़र जाते।

शहादत की ख़ुशी में ख़्वातीन का रक़्स

एक बार "बाबुश्शैख़" या'नी शहन्शाहे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार वाली गली में एक निहायत ही बेहूदा और शर्मनाक मन्ज़र था, खूब त़बले पर थाप पड़ रही थी, शहनाइयां बज रही थीं और काफ़ी लोगों का हुजूम था और बीच में बे पर्दा औ़रतें रक़्स कर रही थीं, कुछ लोगों ने जनाज़ा उठा रखा था। इस मन्ज़र से हम लोगों को बड़ी ह़ैरत हुई। दरयाफ़्त करने पर पता चला कि यहां येह दस्तूर है कि जब कोई मुसल्मान इराक़ व ईरान की ह़ालिया जंग (जो उन दिनों जारी थी) में शहीद

होता है, उस के अइ़ज़्ज़ा उस शहीद की लाश को हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के रौज़ए पाक पर ह़ाज़िरी के लिये लाते हैं और उस मर्दे मुजाहिद की "शहादत की खुशी में" उस के ख़ानदान की औ़रतें इस त़रह़ सड़कों पर रक़्स करती हुई जनाज़े के साथ साथ जाती हैं। !!

दर्से क़ुरआन अगर हम ने न भुलाया होता   येह ज़माना न ज़माने ने दिखाया होता

क़ुरत़ुबा की जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ पर पाबन्दी है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इराक़ी मुसल्मानों का ह़ाल देख कर कलेजा मुंह को आता है, काश ! वहां कोई ऐसी दीनी तह़रीक उठ खड़ी हो जो नेकी की दा'वत आ़म करे और एक बार फिर उधर सुन्नतों का दौर दौरा हो और मुसल्मानों को इन की खोई हुई शानो शौकत वापस मिल जाए। क़ुरत़ुबा (स्पेन) में जब ईसाई मज़्हब फैला तो उन्हों ने यहां कलीसा (या'नी गिरजा) ता'मीर कर लिया। जब मुसल्मानों ने क़ुरत़ुबा फ़त्ह़ किया तो कलीसा को सुल्ह़ की शराइत़ के मुत़ाबिक़ दो ह़िस्सों में बांट दिया गया एक ह़िस्से में मुसल्मानों ने ब दस्तूर "कलीसा" रहने दिया और दूसरा ह़िस्सा "मस्जिद" बना दिया। लेकिन जब क़ुरत़ुबा मुसल्मानों का दारुस्सल्त़नत (CAPITAL) क़रार पाया और यहां की आबादी तेज़ी से बढ़ी तो मस्जिद का ह़िस्सा नमाज़ों के लिये तंग पड़ गया यहां तक कि जब अ़ब्दुर्रह़मान अद्दाख़िल की हु़कूमत आई तो उन के सामने जामेए़ क़ुरत़ुबा की तौसीअ़ का सुवाल आया, कलीसा को मस्जिद में शामिल किये बिग़ैर तौसीअ़ मुम्किन न थी बिना बरीं (या'नी इस लिये) अ़ब्दुर्रह़मान अद्दाख़िल ने ईसाइयों से ज़मीन ख़रीद ली। वसीअ़ ज़मीन ह़ासिल करने के बा'द उन्हों ने जामेअ़ मस्जिद क़ुरत़ुबा की ता'मीर अज़ सरे नौ शुरूअ़ की, मस्जिद का नक़्शा

बड़ा अ़ज़ीमुश्शान था। इसे पायए तक्मील तक पहुंचाने के लिये त़वील मुद्दत दरकार थी। लेकिन अ़ब्दुर्रह़मान अद्दाख़िल ता'मीर शुरूअ़ होने के बा'द दो साल ही में (172 हि.) में फ़ौत हो गए उन के बा'द उन के बेटे हश्शाम ने ता'मीर जारी रखी। बा'द में ख़ुलफ़ाए बनी उमय्या इस मस्जिद में मज़ीद तौसीआ़त करते रहे यहां तक कि ता'मीरी काम का इख़्तिताम तक़रीबन 392 हि. ब मुत़ाबिक़ 1002 ई. में हुवा। इस त़रह़ क़ुरत़ुबा की तारीख़ी जामेअ़ मस्जिद की ता'मीरात में कमो बेश दो सो साल का अ़र्सा लगा। क़ुरत़ुबा की अ़ज़ीमुश्शान शोहरए आफ़ाक़ जामेअ़ मस्जिद को अगर्चे तारीख़ी आसार की हैसिय्यत से बाक़ी रखा गया है मगर सद करोड़ अफ़्सोस! मुसल्मानों की बद आ'मालियों के सबब वहां नमाज़ पढ़ने पर पाबन्दी है। हां सय्याह़ (TOURIST) सिर्फ़ देखने के लिये आ सकते हैं।

18 साल से कम उ़म्र नौ जवानों का मस्जिद में दाख़िला बन्द

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! अफ़्सोस! हमारे गुनाहों की नुहूसत बढ़ती चली जा रही है, दुन्या के एक ऐसे मुल्क में जहां मुसल्मानों की आबादी 90 फ़ीसद बताई जाती है, वहां बे अ़मली का ऐसा ज़बर दस्त सैलाब आ गया कि अब रजबुल मुरज्जब 1432 हि. जून 2011 ई. की एक अख़्बारी रपोर्ट के मुत़ाबिक़ 18 साल से कम उ़म्र के नौ जवानों के लिये मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर क़ानूनी त़ौर पर पाबन्दी आ़इद कर दी गई है !!!

आह ! इस्लाम तेरे चाहने वाले न रहे   जिन का तू चांद था अफ़्सोस वोह हाले न रहे

"मस्जिद भरो तह़रीक" चलाइये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! मस्जिदों की वीरानी पर ख़ूब दिल जलाइये, ज़ोर शोर से "मस्जिद भरो तह़रीक" चलाइये, और एक एक बे

www.dawateislami.net

नमाज़ी पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उसे नमाज़ी बनाइये और यूं अपनी मसाजिद का तहफ़्फ़ुज़ भी फ़रमाइये कि जो मकान अपने मकीनों (या'नी रहने वालों) से आबाद हो उस पर कोई क़ब्ज़ा नहीं जमा सकता, वरना ख़ाली मकान पर कोई भी क़ाबिज़ हो सकता है जैसा कि फ़ारसी मक़ूला है : خانۂ خالی را دَیو می گِیرَد या'नी "ख़ाली घर पर जिन्न भूत क़ब्ज़ा कर लेते हैं।" बहर ह़ाल जो मस्जिद नमाज़ियों से आबाद होगी उस की त़रफ़ नापाक इरादे से आंख उठाने से पहले दुश्मने इस्लाम 420 बार सोचेगा। यहां एक मस्अला ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये कि जिस जगह एक बार शर्अ़न मस्जिद बन गई अब वोह ता क़ियामत मस्जिद ही रहेगी। तह़्तस्सरा (या'नी सातवीं ज़मीन के नीचे) से ले कर अ़र्शे मुअ़ल्ला जो कि सातवें आस्मान के भी ऊपर है वहां तक उस की सारी फ़ज़ा भी मस्जिद है। अब चाहे مَعَاذَ اللّٰه उस पर सड़क ता'मीर हो जाए या मार्केट बना दी जाए, वोह जगह क़ियामत तक मस्जिद ही के हुक्म में रहेगी और उस का एह़तिराम भी बर क़रार रहेगा। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه "तन्वीरुल अब्सार और दुर्रे मुख़्तार" के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं :

وَلَوْخَرِبَ مَاحَوْلَهٗ وَاسْتُغْنِيَ عَنْهُ يَبْقٰى مَسْجِدًا عِنْدَالْاِمَامِ وَالثَّانِيْ اَبَدًا اِلٰى قِيَامِ السَّاعَةِ وَبِهٖ يُفْتٰى

और अगर उस (या'नी मस्जिद) का इर्द गिर्द वीरान हो गया और उस की ज़रूरत न रही तो भी मस्जिद बाक़ी रहेगी इमाम साह़िब (या'नी इमाम अबू ह़नीफ़ा) और इमामे सानी (या'नी इमाम अबू यूसुफ़) के नज़्दीक हमेशा क़ियामत तक, और इसी पर फ़तवा है। (تنویر الابصار و در مختار، 6/550, फ़तावा रज़विय्या, 9/471) वक़ारुल मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद वक़ारुद्दीन क़ादिरी रज़वी

رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जिस जगह एक मर्तबा मस्जिद बन जाती है वोह इस त़रह़ क़ियामत तक मस्जिद हो जाती है कि ऊपर अ़र्श तक और नीचे तह़्तस्सरा तक मस्जिद है उस में एक इंच (भी) जगह कम नहीं की जा सकती।" (वक़ारुल फ़तावा, 2/297)

कर मस्जिदें आबाद तेरी क़ब्र हो आबाद फ़िरदौस अ़ता कर के ख़ुदा तुझ को करे शाद

اٰمین بجاہِ خاتَمِ النّبِیّین صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ दा'वते इस्लामी मस्जिदें आबाद करती है, आप भी मस्जिद आबाद कर के अपने क़ल्बे नाशाद को शाद करने, पांचों वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर हो कर अपने रब को याद करने, इ़श्क़े रसूल से अपने दिल की उजड़ी बस्ती आबाद करने के लिये दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल अपनाए रहिये, ख़ूब ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और "जाएज़ा" के ज़रीए़ रोज़ाना नेक आ'माल का रिसाला पुर कीजिये और हर माह की पहली तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये, आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाता हूं : एक इस्लामी भाई बह़्रे इ़स्यां में मुस्तग़रक़ अपनी ज़िन्दगी के "अनमोल हीरे" ग़फ़्लत की नज़्र किये जा रहे थे, रात गए तक दोस्तों के साथ ख़ुश गप्पियों में मस्रूफ़ उन का मा'मूल था। 18 रमज़ानुल मुबारक 1429 हि. ब मुत़ाबिक़ 19 सितम्बर 2008 ई. को ह़स्बे मा'मूल वोह दोस्त मिल कर बैठे मज़ाक़ मस्ख़रियों में मश्ग़ूल थे और इस के सबब मजलिस से क़ह्क़हों

के फ़व्वारे उबल रहे थे, दरीं अस्ना दा'वते इस्लामी से वाबस्ता एक आ़शिके़ रसूल हमारे पास तशरीफ़ लाए, उन्हों ने सलाम किया और बैठ गए, उन की आमद से उन की मह़फ़िल में कुछ सन्जीदगी आई, उन्हों ने निहायत उ़म्दा मदनी फूलों से नवाज़ा, उन के हुस्ने आवाज़ और मदनी अन्दाज़ से उन्हें इतना सुरूर मिला कि येह उन के मीठे बोलों में खो गए। कुछ देर बा'द वोह जाने लगे तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : भाई ! मज़ीद कुछ देर तशरीफ़ रखिये ! और हमें अच्छी अच्छी बातें बताइये, नेकी की दा'वत का जज़्बा रखने वाले इस्लामी भाई ने हमारी दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा ली। दौराने गुफ़्त्गू फ़िक्रे आख़िरत व इस्लाहे़ उम्मत का मौज़ूअ़ भी ज़ेरे बह़स रहा, उस आ़शिके़ रसूल की पुर तासीर इन्फ़िरादी कोशिश ने उन के दिलों पर गहरे नुकू़श छोड़े। दूसरी रात वोह फिर उसी जगह मह़फ़िल सजाए उन इस्लामी भाई के मुन्तज़िर थे कि ह़स्बे उम्मीद वोह तशरीफ़ लाए और उन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना चलने की दा'वत पेश की, उन के किरदार व गुफ़्तार को देख कर कम अज़ कम वोह तो इन्कार न कर सके और उन के साथ फ़ैज़ाने मदीना की पाकीज़ा फ़ज़ाओं में पहुंच गए। ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्के़ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जज़्बा दिल में उजागर करने वाले रूह़ परवर दीनी माह़ोल ने उन के दिल में मदनी इन्कि़लाब बरपा कर दिया और यूं उस आ़शिके़ रसूल की "इन्फ़िरादी कोशिश" की बरकत से उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल नसीब हो गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علىٰ مُحَمَّد

मुह़द्दिसे आ'ज़म की इन्फ़िरादी कोशिश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इन्फ़िरादी कोशिश के कितने ज़बर दस्त नताइज निकलते हैं ! सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ का अपना

तजरिबा येही है कि इज्तिमाई तौर पर होने वाले बयानात बारहा सुनने के बा वुजूद जिन में तब्दीली नहीं आती, थोड़ी सी इन्फ़िरादी कोशिश उन को बदल कर रख देती है। नेकी की दा'वत के दीनी काम में इन्फ़िरादी कोशिश का एक मुन्फ़रिद मक़ाम है। अम्बियाए किराम عَلَيهِمُ السَّلَام ने तब्लीग़े दीन के लिये जहां इज्तिमाई कोशिशें फ़रमाई हैं वहां इन्फ़िरादी कोशिश भी की है और एक एक के पास जा कर भी उन्हें इस्लाम का पैग़ाम दिया है। बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم ने भी नेकी की दा'वत के लिये ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिशें फ़रमाई हैं चुनान्चे मुहद्दिसे आ'ज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه किसी जगह थे। इस दौरान तीन नौ जवान आप से बैअ़त हुए। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उन्हें मस्लके अहले सुन्नत पर क़ाइम दाइम रहने, इस की तब्लीग़ करने, नमाज़हाए पंजगाना पाबन्दी से पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाई। फिर उन्हें दाढ़ी रखने और मूंछें काटने का बड़े प्यारे अन्दाज़ में हुक्म दिया और फ़रमाया कि जिस तरह़ वित्रों की नमाज़ को वाजिब समझते हो इसी तरह़ दाढ़ी बढ़ाने को भी वाजिब समझो। एक मुश्त दाढ़ी रखना वाजिब है, इस के ख़िलाफ़ करने या'नी कम करने पर गुनाह और अ़ज़ाब होगा। ह़ज़रते मुहद्दिसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ह़सीन तल्क़ीन का उन पर गहरा असर पड़ा उन्हों ने दाढ़ियां रख लीं। अब वोह بِحَمْدِهٖ تَعَالٰی शरीअ़त के पाबन्द हैं और बड़ी वजाहत (या'नी इ़ज़्ज़त) रखते हैं।

(ह़याते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 89)

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है! क्यूं इ़श्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 234)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़

اَلْحَمْدُلِلّٰہ अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه/ ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। مَاشَاءَ اللّٰه الْكَرِيْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआ़ओं से हिस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दावते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislamiindia.org से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से खुद भी पढ़ें और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)